कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं के परोपकार तथा व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 विनीता गुप्ता* और डॉ0 शालिनी चौहान**

सारांश

''वर्तमान दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व मनुष्य के पैत्रक और अर्जित गुणों का संकलन है जो उसके व्यवहार को निर्देशित करने वाली स्थायी गति तथा सामाजिक विशेषताओं की ओर संकेत करता है।'' अनुसन्धानकर्ताओं ने परोपकार तथा व्यक्तित्व के क्षेत्र में विभिन्न दृष्टिकोणों जैसे – सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि का अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कलावर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं के मध्य परोपकार तथा व्यक्तित्व गुणों का अध्ययन करना तथा उनमें सह सम्बन्ध ज्ञात करना। वर्तमान शोध अध्ययन के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त किया गया है। न्यादर्श के लिए कुल 200 छात्राओं का चयन किया गया है। इसका चयन आकस्मिक यादृच्छिक विधि से किया गया है। शोध अध्ययन में सम्मिलित किये गये चरों का मापन करने के लिए (1) परोपकारी मापनी – द्वारा एस0एन0राय तथा डॉ0 सन्वत सिंह 1988 एवं (2) व्यक्तित्व अनुसूची द्वारा डॉ0 महेश (1998) का चयन किया गया। उपलब्धियों के रूप में यह देखने में आया कि आयु, जाति, व्यवसाय आय के आधार पर सार्थक अन्तर है। आयु के आधार पर कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के छात्राओं के परोपकार में सार्थक अन्तर पाया गया एवं जाति, आय एवं व्यवसाय के आधार पर सार्थक अन्तर नही पाया गया। व्यक्तित्व गुणों के सम्बन्ध में भी केवल आयु के आधार सार्थक अन्तर पाया गया। कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं के व्यक्तित्व एवं आयु के बीच धनात्मक सम्बन्ध पाया गया।

प्रस्तावना

साधारण बातचीत की भाषा में व्यक्तित्व शब्द ऐसे गुण या विशेषता को इंगित करता है जिसे व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहार करने तथा पारस्परिक सम्बन्धों की दृष्टि से विशेष महत्व देते हैं।

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है। समाज में वह अपना जीवन यापन सामाजिक दृष्टिकोण के आधार पर करता है। वह अपने समस्त कार्यों को परिणाम देने के लिए व्यक्तित्व द्वारा प्रोत्साहित होता है। किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व स्थिर नहीं होता है। समय–समय पर वातावरण की अन्तक्रियाओं के अनुसार व्यक्तित्व में परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।

''वर्तमान दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व मनुष्य के पैत्रक और अर्जित गुणों का संकलन है। जो उसके व्यवहार को निर्देशित करने वाली स्थायी गति तथा सामाजिक विशेषताओं की ओर संकेत करता है।''

वर्तमान समय में व्यक्ति के व्यक्तित्व में परिवर्तन के साथ ही व्यक्ति की परहितवाद में परिवर्तन हो रहा है। परोपकार की भावना दूसरे व्यक्तियों को लाभान्वित करने की इच्छा से उत्पन्न होती है न कि अपनी कल्याण की कामना से। परोपकार का व्यवहार या परोपकार की भावना पूर्णतया तब मानी जाती हैं जब वह व्यक्ति स्वयं हानि उठाकर व्यक्तियों को लाभ पहुचाने की चेष्टा करता है।

वार्चेल और कपूर (1979) ने अपने अध्ययन के आधार पर उन परिस्थितियों का वर्णन किया है जिनमें व्यक्ति दूसरों की सहायता करना अधिक पसन्द करता है। सहायता तब उत्पन्न होती है जब –

1. व्यक्ति प्रथम सहायता के लिए धनात्मक रूप से पुरूस्कृत हो चुके होते हैं।
2. व्यक्ति धनात्मक भाव में होते हैं।
3. जब व्यक्ति आदर्श व्यवहार देखता है।
4. आज्ञाकारी व्यवहार के नियम या मानक जो सहायता के लिए प्रेरित करते हैं।
5. व्यक्ति दूसरों के लिए गये निर्णय में सहमत अथवा असहमत होते हैं।

परोपकार और व्यक्तित्व एक दूसरे से सम्बन्धित होते हुये भी एक दूसरे के बिल्कुल भिन्न है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामाजिक, आर्थिक क्षमता के अनुसार ही परोपकार करता है।

बेरोन और बायरने (1979) के अनुसार

''यदि आप कार्य से स्पष्ट रूप से लाभ उठाने

*रीडर एवं अध्यक्षा (शिक्षा विभाग), दाऊदयाल महिला महाविद्यालय, फिरोजाबाद (उ. प्र.)
**प्रवक्ता, मनोविज्ञान, दाऊदयाल महिला महाविद्यालय, फिरोजाबाद (उ. प्र.)

हेतु किसी व्यक्ति की सहायता करते हैं तो आप स्वार्थ के कारण व्यवहार करने हेतु कहे जायेंगे। इसलिए आप किसी विशेष श्रेय के पात्र नही है। इसके विपरीत जब आप इससे कुछ भी लाभ नही उठाते है तब भी सहायता करते है तो आप परोपकारी है और आप प्रशंसा के पात्र हैं।''

अनुसन्धानकर्ताओं ने परोपकार तथा व्यक्तित्व के क्षेत्र में विभिन्न दृष्टिकोणों जैसे – सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि का अध्ययन किया है। आधुनिक समय में औद्योगिक एवं वैज्ञानिक विकास अपनी चरम सीमा पर है, मानव होड़ में एक दूसरे से आगे बढ़ने को तत्पर है, व्यक्ति सामाजिक जटिलताओं, व्यस्त जीवन और निरन्तर बाधाओं से घिरा हुआ है, ऐसे समय में परोपकार तथा व्यक्तित्व का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. चयनित प्रतिदर्श की आर्थिक विशेषताओं का अध्ययन करना।
2. कलावर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं के मध्य परोपकार का अध्ययन करना।
3. कलावर्ग तथा विज्ञान वर्ग के मध्य व्यक्तित्व गुणों का अध्ययन करना।
4. कलावर्ग तथा विज्ञान वर्ग के मध्य परोपकार तथा व्यक्तित्व गुणों में सह सम्बन्ध ज्ञात करना।

अध्ययन का औचित्य एवं महत्व

मानव सदैव से जिज्ञासु प्रवृत्ति का रहा है। इसी प्रवृत्ति में रहते हुये वह अपने आस–पास की प्रत्येक घटना, वस्तु को जानने का प्रयास करता है और सफल होता है। आधुनिक समाज मनोवैज्ञानिकों के लिए परोपकारिता एक प्रमुख कार्य क्षेत्र बन गया है। परोपकारिता एक ऐसा सामाजिक व्यवहार है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की सहायता बिना किसी स्वार्थ के करता है। लेकिन आज के युग में व्यक्तियों में परोपकार के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति होती जा रही है। इसका कारण व्यक्ति विशेष की वैयक्तिक भिन्नता तथा वातावरण में भिन्नता है।

अध्ययन का परिसीमांकन

1. वर्तमान शोध अध्ययन में केवल फिरोजाबाद शहर की छात्राओं को लिया गया है।
2. प्रतिदर्श के रूप में दाऊदयाल महिला महाविद्यालय एवं एम0जी0 बालिका महाविद्यालय की कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।
3. लिंग की दृष्टि से केवल छात्राओं को लिया गया है।
4. केवल हिन्दी माध्यम की छात्राओं को लिया गया है।

अध्ययन की परिकल्पनायें

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निर्मित निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के सन्दर्भ में निम्न निराकरणीय परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया।

1. चयनित प्रतिदर्श की आर्थिक विशेषताओं में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. कलावर्ग एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं के बीच परोपकार में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. कलावर्ग एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं के मध्य व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक–अन्तर नही है।
4. कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं के मध्य परोपकार तथा व्यक्तित्व गुणों में सह सम्बन्ध है।

अध्ययन विधि

वर्तमान शोध अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त किया गया है।

प्रतिदर्श का चयन

शोधार्थिनी इस अध्ययन में कुल 200 छात्राओं को प्रतिवर्ष में सम्मिलित किया गया है। प्रतिदर्श का चयन आकस्मिक यादृच्छिक विधि से किया गया है। शोध अध्ययन में इकाइयों के चयन को निम्न तालिका द्वारा प्रर्दशित किया गया है।

तालिका संख्या (1)
प्रतिदर्श विवरण

क्रम संख्या	प्रतिदर्श वर्ग	छात्राओं की संख्या	कुल योग
1	कला वर्ग	100	200
2	विज्ञान वर्ग	100	

उपकरणों का चयन

प्रस्तुत शोध अध्ययन के सन्दर्भ में सम्मिलित किये गये चरों के मापन के निमित्त सम्बन्धित परीक्षणों का चयन किया गया है –

(1) परोपकारी मापनी

प्रस्तुत परीक्षण एस0एन0राय तथा डॉ0 सन्चत सिंह (1988) द्वारा तैयार किया गया है। इस परीक्षण का प्रशासन व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों प्रकार से किया जा सकता है। इस परीक्षण में कुल 30 पद है। प्रत्येक के तीन–तीन विकल्प है इसमें सही विकल्प पर (√) का निशान लगाना है।(2) व्यक्तित्व अनुसूची

प्रस्तुत परीक्षण डॉ0 महेश (1998) द्वारा निर्मित किया गया है। इस परीक्षण के कुल 6 अलग–अलग गुणों का मापन करते हैं। इस परीक्षण के प्रत्येक भाग में 10 प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न के तीन विकल्प हाँ, अनिश्चित तथा नही है। इस परीक्षण की विश्वसनीयता तथा वैधता उच्च है। परीक्षण के 6 उप परीक्षण निम्न है –

1. सक्रियता – निष्क्रियता
2. उत्साही – निरूत्साही
3. दृढ़ता – विनम्रता
4. सन्देशील – विश्वसनीय
5. उदासीनता – अउदासीनता
6. संवेगात्मक अस्थिरता – संवेगात्मक स्थिरता

इस परीक्षण में हाँ उत्तर को 2, अनिश्चित उत्तर को 1 तथा नहीं उत्तर को 9 अंक दिये गये हैं। प्रत्येक भाग में उच्चतम प्राप्तांक 20 तथा निम्नतम प्राप्तांक 0 है पूरे परीक्षण का प्राप्तांक 100 है। इस प्रकार प्रत्येक भाग के मूल प्राप्तांक प्राप्त करके उसके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में निष्कर्ष निकाला जाता है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

चयनित प्रतिदर्श की आर्थिक विशेषताओं का अध्ययन करना।

अध्ययन में सम्मिलति सभी छात्रायें 16 – 20 वर्ष तक की आयु की है प्रतिदर्श में सम्मिलित कला वर्ग की छात्राओं में उच्च जाति की 349, पिछड़ी जाति की 35, तथा अनुसूचित जाति का 31 छात्रायें हैं। इसी प्रकार विज्ञान वर्ग की कुल छात्राओं में उच्च जाति की 40, पिछड़ी की 34 तथा अनुसूचित जाति की 26 छात्रायें हैं।

माता–पिता की आयु के आधार पर 10,000 से नीचे की आय वाले कला वर्ग की छात्रायें 70 तथा 10,000 से ऊपर की आय वालों 60 छात्रायें शामिल हैं।

मातापिता के व्यवसाय के आधार पर कला वर्ग की 46 छात्राओं के माता–पिता व्यापार, 24 छात्राओं के माता पिता सर्विस तथा 30 छात्राओं के माता पिता अन्य कार्यों में सम्मिलित है। विज्ञान वर्ग की 38 छात्राओं के माता–पिता व्यापार, 46 छात्राओं के माता–पिता सर्विस तथा 26 छात्राओं के माता–पिता अन्य कार्यों में लगे हैं।

2. कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के मध्य परोपकार का अध्ययन

इसमें आयु, जाति, आय तथा व्यवसाय के आधार पर परोपकार की गणना की गई है।

तालिका (2)
आयु, जाति, आय और व्यवसाय के आधार पर कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं के परोपकार में मध्यमान मानक विचलन तथा 't' मान

आयु के आधार पर	कला वर्ग		विज्ञान वर्ग		't' मान	सार्थकता स्तर
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
18 से नीचे	45.50	4.19	47.54	8.16	0.868	>0.05
18 से ऊपर	43.89	7.95	48.46	4.59	2.640	<0.05
जाति के आधार पर						
सामान्य जाति	42.96	6.47	48.69	6.69	3.254	<0.05
पिछड़ी जाति	49.31	4.62	47.36	6.68	0.940	>0.05
अनुसूचित जाति	39.33	7.41	45.00	3.39	1.438	>0.05
आय के आधार पर						
10000 से नीचे	48.04	6.75	46.30	9.66	0.608	>0.05
10000 से ऊपर	43.64	7.45	48.45	5.45	3.007	<0.05
व्यवसाय के आधार पर						
व्यापार	42.54	9.20	48.89	5.19	2.495	<0.05
सर्विस	45.73	5.61	48.11	7.08	1.282	>0.05
अन्य	43.87	6.68	43.25	6.87	0.164	>0.5

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि 18 वर्ष से नीचे की छात्राओं में परोपकार कम तथा 18 वर्ष से ऊपर की छात्राओं में अधिक पाया गया।

सामान्य जाति में विज्ञान वर्ग का मध्यमान कला वर्ग से अधिक है और यह 0.05 स्तर पर सार्थक है अतः विज्ञान वर्ग में परोपकार अधिक पाया गया। लेकिन पिछड़ी तथा अनुसूचित जाति की छात्राओं के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

परिणामों से यह भी स्पष्ट होता है कि माता–पिता की 10000 रू0 से नीचे की कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं के परोपकार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है लेकिन 10000 से ऊपर की आय में सार्थक अन्तर पाया गया।

व्यवसाय के आधार पर, व्यापार करने वाले माता–पिता की लड़कियों में सार्थक अन्तर है लेकिन सर्विस व अन्य कार्य करने वाले माता–पिता की लड़कियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के मध्य व्यक्तित्व का अध्ययन

इससे सम्बन्धित प्राप्त परिणामों को तालिका संख्या (3) में दिखाया गया है।

तालिका संख्या (3)
कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों का मध्यमान, मानक विचलन तथा 't' मान

व्यक्तित्व आयाम	कला वर्ग		विज्ञान वर्ग		't' मान	सार्थकता स्तर
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
(1) सक्रियता–निष्क्रियता	13.04	2.60	13.48	2.88	0.802	>0.05
(2) उत्साही–निरूत्साही	12.72	3.35	11.38	3.31	2.012	<0.05
(3) दृढ़ता–विनम्रता	10.82	3.65	9.48	3.03	1.997	<0.05
4) सन्देहशील–विश्वसनीतय	7.62	4.77	6.74	4.31	0.968	>0.05
5) उदासीनता–अउदासीनता	9.38	4.59	9.12	4.89	0.274	>0.05
6) संवेगात्मक अस्थिरता–स्थिरता	10.72	4.40	11.20	4.66	0.528	>0.05
योग	64.30	15.50	61.40	13.65	0.991	>0.05

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कलावर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं के समूह में 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। कुल समूह में व्यक्तित्व गुणों की मात्रा समान है।

तालिका संख्या (4)
जाति, आयु तथा व्यवसाय के आधार पर कला वर्ग, विज्ञान वर्ग की छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों का मध्यमान, मानक विचलन तथा 't' मान

जाति के आधार पर	कला वर्ग		विज्ञान वर्ग		't' मान	सार्थकता स्तर
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
सामान्य जाति	67.16	13.98	60.44	12.12	1.944	>0.05
पिछड़ी जाति	60.06	15.52	62.29	14.35	0.407	>0.05
अनुसूचित जाति	63.89	17.87	66.00	16.79	0.200	>0.05
आय के आधार पर						
10000 से नीचे	63.40	13.04	66.10	13.92	0.543	>0.05
10000 से ऊपर	65.20	17.68	60.23	13.32	1.291	>0.05
व्यवसाय के आधार पर						
व्यापार	70.59	17.47	62.16	14.76	1.464	>5.05
सर्विस	61.95	15.44	61.33	13.23	0.151	>0.05
अन्य	62.33	12.13	58.25	9.91	0.616	>0.05

तालिका से स्पष्ट है कि जाति, आयु तथा व्यवसाय के आधार पर कलावर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों के मध्यमान तथा मानक विचलन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

4. कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं में परोपकार तथा व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों में सहसम्बन्ध

आयाम	कलावर्ग					विज्ञान वर्ग				
	मध्यमान	मानक विचलन	सहसम्बन्ध	't' मान	सार्थकता स्तर	मध्यमान	मानक विचलन	सहसम्बन्ध	't' मान	सार्थकता स्तर
!	44.34	7.14	+0.305	–	–	48.02	6.57	–	–	–
–निस्यिता	13.04	2.60	-0.354	2.219	>0.05	13.48	2.88	+0.553	4.598	<0.05
-निरूत्साही	12.72	3.35	-0.387	2.622	>0.05	11.38	3.31	+0.289	2.091	<0.05
विनम्रता	10.82	3.65	-0.377	2.908	>0.05	9.48	3.03	-0.169	1.188	>0.05
ल–विश्वसनीयता	7.62	4.77	-0.286	2.820	>0.05	6.47	4.31	-0.060	0.416	>0.05
ता–अनुदासीनता	9.38	4.59	-0.227	2.068	>0.05	9.12	4.89	-0.172	1.210	>0.05
क–स्थिरता	10.72	4.40	-0.380	1.615	<0.05	11.20	4.68	-0.119	0.830	>0.05
				2.846	<0.05	61.40	13.65	+0.028	0.194	>0.05

उपरोक्त तालिका कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं में परोपकार तथा व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों में सहसम्बन्ध को दर्शाती है।

कला वर्ग में परोपकार तथा व्यक्तित्व के सक्रियता निष्क्रियता आयाम में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया जिससे स्पष्ट होता है कि इस आयाम में परोपकार बढ़ भी सकता है और कम भी। परोपकार तथा अन्य आयामों तथा कुल योग में ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

विज्ञान वर्ग की छात्राओं के मध्यमान तथा मानक विचलन से स्पष्ट है कि प्रथम तथा द्वितीय आयाम का परोपकार तथा व्यक्तित्व गुणों में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया लेकिन अन्य 4 आयामों में ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

उपलब्धियाँ एवं निष्कर्ष

1. आयु, जाति, व्यवसाय, आय के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया है क्योंकि सभी आर्थिक विशेषतायें अलग अलग है। कुछ छात्रायें उच्च स्तर, मध्यम स्तर तथा कुछ निम्न स्तर की है। इसलिये चयनित प्रतिदर्श की आर्थिक विशेषताओं में अन्तर है।
2. आयु के आधार पर कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं के परोपकार में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. जाति के आधार पर कलावर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं के परोपकार तथा व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

4. आय के आधार पर कलावर्ग तथा विज्ञान वर्ग की माता–पिता की 10,000 से नीचे की आय वाली छात्राओं के परोपकार में सार्थक अन्तर नहीं है लेकिन 10,000 से ऊपर की आय वाली छात्राओं के परोपकार में सार्थक अन्तर है।
5. व्यवसाय के आधार पर कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं के परोपकार में सार्थक अन्तर नहीं है।
6. कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. आय तथा व्यवसाय के आधार पर भी कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अन्तर नहीं है।
8. आयु के आधार पर कलावर्ग तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं में परोपकार में सहसम्बन्ध पाया गया।
9. कला वर्ग की छात्राओं में परोपकार तथा व्यक्तित्व गुणों में सहसम्बन्ध नही है।
10. विज्ञान वर्ग की छात्राओं में परोपकार तथा व्यक्तित्व गुणों में धनात्मक सहसम्बन्ध है।
11. कला वर्ग की छात्राओं के व्यक्तित्व तथा आयु के बीच सहसम्बन्ध है।
12. विज्ञान वर्ग की छात्राओं के व्यक्तित्व तथा आयु के बीच धनात्मक सम्बन्ध है।

निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि कलावर्ग तथा विज्ञान वर्ग के मध्य परोपकार में अन्तर है। लेकिन दोनों वर्गों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं है। समस्त छात्राओं के व्यक्तित्व में एक समान विशेषतायें पायी जाती हैं। दोनों वर्गों में परोपकार तथा व्यक्तित्व में सहसम्बन्ध पाया जाता है।

सन्दर्भ सूची

अलाम, काजी गॉस (1993) ''व्यक्तित्व का परोपकार से सम्बन्ध'' राधा प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली 2 – 7

गुप्ता, एस0पी0 तथा गुप्ता उमा (1999), ''सांख्यिकीय के सिद्धान्त'' सुल्तान चन्द एण्ड संस दरियागंज, नई दिल्ली।

जायसवाल, सीताराम (1993) ''व्यक्तित्व के सिद्वान्त'' व्यक्तित्व का मनोविज्ञान। विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

झा, पी0के0 यादव, के0पी0, कुमारी ऊषा (1997) ''परोपकारी व्यवहार में लिंग भेद और धार्मिक सांस्कृतिक परिवर्तन''। इन्डियन जनरल ऑफ साइकोमेट्री एण्ड एजूकेशन 28(2), 105 – 108

त्यागी, मनोरमा (1997), ''पैलक परोपकारिक अभिवृत्तियाँ और आयु के रूप में परोपकारवाद। जनरल ऑफ साइकोलोजिकल रिसर्च 1, 41 (3), 109 – 112

त्यागी, मनोरमा (1999) ''बुद्धि एवं लिंग के कार्य के रूप में परोपकार''। प्राची जनरल आफ साइकोकल्चरल डाइमेन्शन। 15(2) 95 – 97

भार्गव एम0 और बंसल इन्दु (1996) ''पैतृक तिरस्कृत बालकों के व्यक्तित्व अनुसन्धान के प्रति दृष्टिकोण''। प्राची जनरल ऑफ साइका कल्चरल डाइमेन्शन 12(2) : 63 – 68

राय, पी0एन0 (1999) ''अनुसन्धान परिचय'' लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा।

त्रिपाठी, आर0बी0 सिंह, आर0 एन0 (1999) ''व्यक्तित्व के सिद्धान्त'' व्यक्तित्व का मनोविज्ञान गंगा सरन एण्ड गैण्ड सन्स वाराणसी, 225–324

त्रिपाठी, एल0बी0 (1999) ''सहायतापरक व्यवहार और परोपकारवाद'' आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान। एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, 301 – 303

गुप्ता, एस0पी0 और गुप्ता अलका (2007) ''उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान'' शारदा पुस्तक भवनद्व इलाहाबाद 218